समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Thursday, 27 August 2026

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने हाथ मे धंनुष लेकर छोड़ा तीर, दिल्ली समेत देशभर मे रंावण दहन का महापर्व

Publisher

Published on 03 Oct 2025

2 अक्टूबर 2025 को पूरे देश में विजयादशमी का पर्व धूमधाम और उल्लास के साथ मनाया गया। इस मौके पर रावण दहन की परंपरा ने सभी को बुराई पर अच्छाई की जीत की याद दिलाई। दिल्ली में इस वर्ष विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करने वाला कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने भाग लिया और हाथ में धनुष लेकर तीर छोड़कर रावण दहन का शुभारंभ किया।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का यह हिस्सा समारोह में लोगों के लिए प्रेरणास्पद रहा। उन्होंने हाथ में धनुष लेकर प्रतीकात्मक तीर छोड़ा, जो बुराई पर अच्छाई की विजय का संदेश देने वाला था। इस अवसर पर मंच पर मौजूद वरिष्ठ अधिकारी और आम नागरिक राष्ट्रपति के इस अद्भुत अंदाज को देखकर मंत्रमुग्ध रह गए।

दिल्ली के कई पंडालों और मैदानों में रावण का विशाल पुतला सजाया गया। स्थानीय कलाकारों ने रामलीला का मंचन किया और राम द्वारा रावण पर विजय पाने की कथा को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया। बच्चों से लेकर बुजुर्ग तक सभी दर्शक राम, रावण और अन्य पात्रों के अभिनय में मग्न रहे।

उत्तर प्रदेश और बिहार में दशहरा उत्सव विशेष रूप से आकर्षक रहा। कई नगरों में विशाल पुतले जलाए गए और इस अवसर पर धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। पटाखों की आवाज़, भव्य रोशनी और मंदिरों में हवन-पूजा ने पूरे वातावरण को उत्सवमय बना दिया।

राजधानी दिल्ली में रावण दहन कार्यक्रम को केंद्र सरकार और स्थानीय प्रशासन ने बड़ी सुरक्षा व्यवस्था के तहत आयोजित किया। इसके तहत भीड़ प्रबंधन, ट्रैफिक नियंत्रण और आग सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया। समारोह में शामिल होने वाले लोगों को मार्गदर्शित किया गया ताकि सभी सुरक्षित रूप से आयोजन में भाग ले सकें।

इस मौके पर लोगों ने न केवल रावण दहन का आनंद लिया, बल्कि रामलीला और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का भी लुत्फ उठाया। महिलाओं और बच्चों ने पारंपरिक पोशाक पहनकर समारोह में भाग लिया। मिठाइयों और प्रसाद का वितरण भी बड़े उत्साह के साथ हुआ।

रावण दहन का पर्व भारतीय संस्कृति में बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक माना जाता है। इसे दशहरा के नाम से जाना जाता है। इस दिन भगवान राम ने बुराई के प्रतीक रावण का संहार किया था। इस ऐतिहासिक कथा के आधार पर देशभर में यह पर्व मनाया जाता है।

उत्तर प्रदेश के अयोध्या, लखनऊ और बिहार के पटना, गया जैसे शहरों में रावण दहन विशेष रूप से आकर्षक रहा। शहरों में नगरिकों ने रात तक रावण दहन और झांकियों का आनंद लिया। बच्चों ने भी अपने माता-पिता के साथ रावण दहन के इस पारंपरिक उत्सव का हिस्सा बनकर ज्ञान और मनोरंजन दोनों का अनुभव किया।

दशहरा केवल धार्मिक उत्सव नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक समरसता का भी प्रतीक है। इस दिन लोग अपने जीवन में बुराई को त्यागने और अच्छाई की ओर बढ़ने का संदेश लेते हैं। परिवार और मित्र मिलकर रावण दहन का आनंद लेते हैं और यह पारिवारिक और सामाजिक बंधन को मजबूत करता है।

इस वर्ष राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की मौजूदगी ने रावण दहन के उत्सव को और अधिक गौरवपूर्ण बना दिया। उनका हाथ में धनुष लेकर तीर छोड़ना लोगों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बना और बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक उत्सव के महत्व को दर्शाता है।

दिल्ली, यूपी, बिहार और अन्य राज्यों में दशहरा पर्व के दौरान आयोजित होने वाले रावण दहन के आयोजन ने भारतीय संस्कृति और परंपरा की धरोहर को जीवित रखा। धार्मिक कथाओं का मंचन, सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ और पारंपरिक परिधान समारोह में शामिल होने वाले लोगों को एक अद्वितीय अनुभव प्रदान करते हैं।

कुल मिलाकर, 2 अक्टूबर 2025 को मनाया गया विजयादशमी और रावण दहन का यह उत्सव भारतीय संस्कृति, परंपरा और सामाजिक मूल्यों का प्रतीक रहा। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की भागीदारी ने इस त्योहार को और भी विशेष बना दिया। यह पर्व बुराई पर अच्छाई की विजय, सामाजिक एकता और सांस्कृतिक उत्सव का संदेश लेकर आया, जिससे सभी नागरिकों के दिलों में उत्साह और आनंद की लहर दौड़ गई।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.